International Journal of Hindi Research
ISSN: 2455-2232, Impact Factor: RJIF 5.22
www.hindijournal.com
Volume 3; Issue 2; March 2017; Page No. 64-67

हिन्दी की महत्वपूर्ण विधाः यात्रा साहित्य

करुणा सक्सेना

शोधार्थिनी, जीवाजी विश्वविद्यालय, ग्वालियर, मध्यप्रदेश, भारत।

प्रस्तावना

मानव का जन्म प्रकृति की गोद में होता है अतः मानव–मन में प्रकृति के प्रति गहन जिज्ञासा, प्रेम–भाव व सम्बन्ध होना स्वभाविक है। इन्ही भावों की व्याख्या मानव को बहुत कुछ देखने एवं सीखने के लिए प्रेरित करती है और तब जन्म होता है – यात्राओं का। यात्रा मानव जीवन की नैसर्गिक प्रक्रिया है। आदिकाल से ही मानव यात्राओं पर निर्भर रहा है एवं मानव जीवन का विकास इन्ही यात्राओं का परिणाम है। हम यह नही कह सकते यात्राऐं ही सभ्यताओं को जन्म देती है, वरन हमारी सभ्यता और हमारी संस्कृति इन्ही यात्राओं का फल है। प्रारम्भ से ही मानव कभी भोज्य पदार्थो के लिए, कभी जीवन को सुरक्षित करने के लिए, कभी युद्ध के लिए तो कभी धार्मिक स्थानों के दर्शन के लिए यात्राऐं करता रहा है। यह तो सत्य है कि मानव अपनी आवश्यकताओं के अनुसार यात्रा करता रहा है किन्तु सभ्यता के विकास के बाद मानव की यात्राओं के मापदण्ड भी बदलते चले गये और मानव में यायावरी वृत्ति का भी विकास हुआ, यातायात के साधनों की सुलभता ने जैसे मानव जीवन में पंख से लगा दिए अब मनुष्य को ठहरना कहॉ था उसे तो बस चलते जाना था।

मानव जीवन का धर्म ही उसकी गतिशीलता है, उसका चलना है। यात्राऐं मानव व्यक्तित्व का भी सहज निर्माण करती है क्योंकि एक यायावर जब विभिन्न देशों एवं संस्कृतियों का भ्रमण करता है, तो उसके मन में वैश्विक एकता का स्नेह भाव उत्पन्न होता है। वह विभिन्न संस्कृतियों से बहुत कुछ सीखता है एवं दूसरों की अपेक्षा उस यायावर व्यक्ति में जीवन को जीने की उच्चतम सम्भावनाऐं विराजमान होती जाती है। यात्रा मानव जीवन में स्फूर्ति के बीज रोपित करती है। मानव जाति के प्रति प्रेम भाव एवं प्रकृति के प्रति संवेदनशीलता का अनुभव कराती है। सभी महानतम संतों ने दिन रात भ्रमण कर समाज में सौहार्द की भावना का प्रचार प्रसार किया एवं अपने ज्ञान में समृद्धि की।

साहित्यिक विधा के रूप में यात्रा साहित्य

मानव एक रचनाशील प्राणी है उसके हर कार्य में ईश्वरीय प्रदत्त रचनाशीलता निवास करती है अतः ऐसे में मानव द्वारा की गयी यात्राऐं भी उसकी रचनाशील मनोवृत्ति से प्रेरित होती है। जब मानव यात्राओं में प्राप्त अनुभवों को अपनी संवेदनशील लेखनी के माध्यम से लिपिबद्ध करता है तब जन्म होता है हिन्दी की महानतम विधा यात्रा–साहित्य का। यात्रा वृत्तांतों में वृत्तांतकार यात्रा का स्थूल वर्णन तो करता ही है साथ ही साहित्यकार की रचनात्मक संवेदनशील दृष्टि उसके वृत्तांत को मनमोहक एवं एक फिल्म की रील जैसा भी बना देती है। ऐसे में आवश्यक हो जाता है कि वह यर्थाय को बराबर सम्प्रेषित करता चले अन्यथा वह एक काल्पनिक कहानी सा न लगने लगे या बोझिल सा भी न हो जाऐ। यात्रा साहित्य में अन्य साहित्यिक विधाओ की भांति समस्त साहित्यिक गुण होते हैं, परन्तु यात्रा साहित्य की विशिष्ट वर्णन शैली इसे अन्य विधाओं में विशिष्ट स्थान प्रदान करती है और यह अत्यन्त स्वाभाविक है। यात्रा साहित्य को सम्प्रेषित करने की कलात्मक शैली इस साहित्य को उच्चतम स्तर प्रदान करती है।

यात्रा साहित्य को परिभाषित करते हुए कहा गया है

"सौन्दर्य बोध की दृष्टि से, उल्लास की भावना से प्रेरित होकर यात्रा करने वाले यायावर एक प्रकार से साहित्यिक मनोवृत्ति के माने जा सकते है और उनकी मुक्त अभिव्यक्ति को यात्रा–साहित्य कहा जा सकता है।"

साहित्यकार अपने द्वारा की गई यात्राओं के एक–एक क्षण को जीता है और अपनी कलम के माध्यम से स्थूल दर्शन का सजीव चित्रण करता है। उन्हें पाठक सम्मुख जीवन्तता प्रदान करता है। साहित्यकार की जीवन्त अभिव्यक्ति वृत्तांत को जीवन प्रदान करती है। साहित्यकार जितनी आत्मीयता से अपने अनुभूतियों को अभिव्यक्त करता है, पाठक भी उतने ही मनोभाव एवं प्रेम के साथ उससे साधारणीकरण कर पाता है। इस प्रकार एक सुस्थापित सुविकसित देश व संस्कृति का भ्रमण करने वाला साहित्यकार अपने देश के पाठकों को समाज के प्रति जागरूकता एवं चेतना प्रदान करता है। उनमें विश्व के प्रति कौतुहल को भी जन्म देता है तो कोतुहल का पोषण भी करता है।

यात्रा साहित्य के विकास पर यदि दृष्टिपात किया जाऐ तो ज्ञात होता है कि सर्वप्रथम हस्तलिखित रूप में श्री गोस्वामी विट्ठल जी द्वारा "बनयात्रा" ग्रन्थ प्राप्त हुआ है। इसी प्रकार श्रीमन जी महाराज की मॉ का भी हस्तलिखित ग्रंथ "बनयात्रा" दूसरे यात्रा ग्रंथ के रूप में प्राप्त होता है, जो आज भी उपलब्ध है। प्रारम्भ में यात्रा ग्रंथ लगभग भक्ति भावना से ओतप्रोत हुआ करते थे क्योंकि लगभग सभी तीर्थ स्थलों के वृत्तांत है। इसी प्रकार भारतेन्दु

युग तक आते–आते यात्रा साहित्य के स्वरूप में कुछ परिवर्तन आया अब यात्रा वृत्तांत पत्र पत्रिकाओं में प्रकाशित होने लगे थे। भारतेन्दु जी ने भी अपने वृत्तांत रोचक तरीके से प्रस्तुत किये यथा – "सरयू पार की यात्रा", "मेहदावल की यात्रा", "लखनऊ की यात्रा", "हरिद्वार की यात्रा" एवं "वैद्यनाथ की यात्रा"। यद्यपि उनके यह वृत्तांत भी भक्ति भावना से ओत प्रोत थे परन्तु साथ में यात्रा के अनेक अनुभवों का भी इसमें वर्णन किया गया था। इसी प्रकार प्रतापनारायण मिश्र द्वारा लिखित "कन्नौज में तीन दिन यात्रा" वृत दो भागों में छापा गया था। प्रतापनारायण मिश्र का ही एक दूसरा यात्रा वृत "विलायत यात्रा" का प्रकाशन भी हुआ। यह सभी यात्रा वृत पत्र–पत्रिकाओं में प्रकाशित होते रहे। उस काल में यात्रा वृत्तांतों का इस गति से लिखना व प्रकाशित होना यात्रा साहित्य के लिए एक महत्वपूर्ण प्रारम्भ माना जाता है।

सन् 1990 तक आते–आते उस काल की विभिन्न पत्रिकाओं जैसे सरस्वती, मर्यादा आदि में यात्रा साहित्व की धूम सी हो गयी। द्विवेदी जी ने भी उस समय "उत्तरी ध्रुव की यात्रा", "दक्षिणी ध्रुव की यात्रा" नाम के यात्रा वृत प्रकाशित किये। 1902 में ठाकुर गदाधर सिंह का "चीन में तेरह मास" नामक ग्रंथ प्रकाशित हुआ। सन् 1911 में सत्यदेव परिव्राजक का "अमेरिका दिग्दर्शन" प्रकाशित

हुआ। सत्यदेव परिव्राजक के ही "मेरी कैलास यात्रा" 1915, "अमेरिका भ्रमण" 1916, "मेरी जर्मन यात्रा" 1926 आदि यात्रा–ग्रंथ प्रकाशित हुऐ। 1931 में कन्हेयालाल मिश्र द्वारा लिखा "हमारी जापान यात्रा" ग्रंथ प्रकाशित हुआ। 1932 में श्रीराम शर्मा के दो यात्रा ग्रंथ "कैलास यात्रा" एवं "शिकार" का भी प्रकाशन हुआ।

सन् 1933 में यात्रा साहित्य में राहुल सांकत्यायन का पदार्पण हुआ और उन्होने यात्रा साहित्य को अपने यात्रा ग्रंथों से सर्वाधिक समृद्व बनाया। 1933 में उनका "तिब्बत में सवा वर्ष" का प्रकाशन हुआ। इसके साथ ही उनके अनेकों यात्रा ग्रंथ प्रकाशित होते चले गये यथा – "मेरी तिब्बत यात्रा" 1934, "मेरी यूरोप यात्रा" 1935, "मेरी जापान यात्रा" 1935, "ईरान यात्रा" 1937, "मेरी लद्वाख यात्रा" 1939, "मेरी जीवन यात्रा" 1946, "किन्नर देश मे" 1948, "घुमक्कड़ शास्त्र" 1949 एवं "रूस में पच्चीस मास" 1952। इस प्रकार राहुल सांकृत्यायन ने यात्रा साहित्य को इतना धनवान बना दिया कि इस दौरान अन्य साहित्यकारों के भी ग्रंथ आते रहे परन्तु राहुल सांकृत्यायन के ग्रंथों का बोलबाला बना रहा। राहुल सांकृत्यायन एवं उनके समकालीन यात्रा साहित्यकारों ने भावी साहित्यकारों के लिए एक मजबूत पृष्ठभूमि भी तैयार कर दी।

1954 में रामवृक्ष बेनीपुरी का एक और यात्रा ग्रंथ आया "उड़ते चलो उड़ते चलो" जिसमें उन्होंने बहुत सुन्दर ढंग से अपनी यात्राओं का वर्णन किया। सन् 1952 में ही रामवृक्ष बेनीपुरी का "पैरों में पंख बांधकर" यात्रा ग्रंथ प्रकाशित हुआ। जिसमें बेनीपुरी ने रचनात्मक एवं पूर्ण उल्लास के साथ विदेशी यात्राओं का वर्णन किया। सन् 1953 में अज्ञेय का "अरे यायावर रहेगा याद" यात्रा ग्रंथ आया। जो एक नये आत्मविश्वास एवं संवेदनशीलता के साथ प्रस्तुत हुआ। इसी वर्ष मोहन राकेश का यात्रा ग्रंथ "आखिरी चट्टान तक" आया जिसमें उन्होंने भारत के दक्षिणी छोर तक का सौन्दर्यात्मक व कहानीनुमा वर्णन किया। सन् 1953 में यशपाल का "लोहे की दीवार के दोनों ओर" आया जो राजनैतिक यात्रा वर्णन था। इस प्रकार स्वतंत्रता के पश्चात यात्रा साहित्य में सीढ़ी दर सीढ़ी ऊँचाई एवं व्यापकता दोनों को प्राप्त किया। विष्णु प्रभावकर, काका कालेलकर, प्रभाकर द्विवेदी, यशपाल एवं प्रभाकर माचवे आदि अन्य यात्रा साहित्यकारों ने यात्रा साहित्य को दिन प्रतिदिन समृद्ध किया। आज देश में औद्योगिकी एवं प्रौद्योगिकी के तीव्रतम विकास से यात्राओं की संख्या एवं गति भी बढ़ती जा रही है। आज यातायात की सुगमता एवं सुलभता ने भी मनुष्य में यायावरी वृत्ति को विशेष रूप से प्रेरित किया है।

यात्रा साहित्य का स्वरूप

जीवन स्वयंमेव एक यात्रा है ऐसे में जीवन का कोई भी विषय हमारे यात्रा–वृत्तांत का विषय हो सकता है। अतः स्पष्ट है कि यात्रा साहित्य का क्षेत्र अत्यन्त व्यापक है और इसके अन्तर्गत सम्पूर्ण विश्व को समाहित किया जा सकता है। इस प्रकार यात्रा साहित्य वैश्विक दूरी एवं असमानताओं को दूर कर समस्त विश्व को एक स्नेह सूत्र में बांधता है एवं "वसुधैव कुटुम्वकम्" की भावना को प्रबल करता है। यात्रा साहित्य के अन्तर्गत किसी देश की संस्कृति कला, भाषा, धर्म, राजनीति, सामाजिक व्यवस्थाऐं, साहित्य, शिक्षा एवं आर्थिक व्यवस्थाओं का विवरण प्राप्त होता है। साहित्यकार के माध्यम से किसी भी अन्य देश के समस्त पहलुओं का तो ज्ञान प्राप्त होता ही है साथ ही हमारे देश की संस्कृति व धर्म का प्रचार प्रसार भी भलि–भांति हो जाता है। इस प्रकार वैश्विक स्तर पर विभिन्न संस्कृतियों का मेल–जोल स्थापित होता है।

आज यात्रा साहित्यकार बड़े ही रोचक ढंग से अपने वृत्तांतों को लिपिबद्ध करते है। यद्यपि यह सत्य है कि यात्रा साहित्य हिन्दी साहित्य की स्वतंत्र विधा है। परन्तु यह भी स्पष्ट है कि यात्रा साहित्य का हिन्दी की अन्य विधाओं से भी सहज सम्बन्ध है। प्रारम्भ से देखने में आता है कि यात्रा वृत्तांत लिखने में निबन्धात्मक शैली खासी लोक प्रिय रही है। क्योंकि निबन्धात्मक शैली में लेखक व्यक्तिनिष्ठ होकर अपनी लेखनी चलाता है और वृत्तांत की महत्ता में हर संभव मोहकता को प्रेषित करता है। यात्रा विवरण को संस्मरण के रूप में भी लिखना प्रचलन में रहा है। अज्ञेय ने तो यात्रा वृत्तांत की जगह यात्रा संस्मरण शब्द ही प्रयोग में लिया है। डायरी एवं पत्र शैली भी यात्रा वृत्तांत लिखने में प्रयुक्त होती है। यात्रा को कहानी सा रोचक बनाकर की प्रस्तुत किया जाता है।

एक सतत दृष्टिकोण से देखने पर हमे ज्ञात होता है कि आत्मकथा भी एक प्रकार का यात्रा साहित्य है। क्योंकि जीवन को हम एक यात्रा मानते है ऐसे में यदि एक साहित्यकार अपनी जीवन अनुभूतियों को अभिव्यक्त करता है तो वह जीवन–यात्रा का ही वर्णन कर रहा होता है। परन्तु पूर्ण रूप से आत्मकथा को यात्रा–साहित्य की श्रेणी में नही गिना जा सकता है, बल्कि यात्रा के दौरान अनुभव किये गये वृत्तांतों को आत्मकथात्मक शैली में लिखना यात्रा साहित्य माना जाता है। दोनों ही विधाओं में वर्णन की समानता है क्योंकि एक पहली सम्पूर्ण यात्रा है तो दूसरी उस सम्पूर्ण यात्रा का एक महत्वपूर्ण अंश। यात्रा साहित्य का स्वरूप दिन प्रतिदिन निखरता जा रहा है। आज के साहित्यकार अपने यात्रा वृत्तांत को अत्यन्त पाठक–सुगम एवं आकर्षक शैली में सम्प्रेषित कर रहे हैं।

सम्प्रेषण का यही स्वरूप आगे चलकर यात्रा साहित्य को उद्देश्यात्मक रूप में वर्गीकृत करने लगता है। जैसे यात्रा साहित्य का उद्देश्य किसी देश की संस्कृति को समझने के लिए प्रेरित करता है अर्थात उक्त देश की शिक्षा व्यवस्था, राजनैतिक वातावरण, कला एवं धर्म को व्याखित करने के लिए एक उच्च दृष्टि प्रदान करता है। कई बार लेखक प्रकृति सौन्दर्य को देखने के उद्देश्य से यात्राऐं करता है एवं अपने ज्ञान में वह प्राकृतिक दृष्टिकोण को मुख्य रूप से वर्णित करता है। निसंदेह यह सत्य है, जो मानव प्रकृति की गोद में जन्म लेता है वह प्रकृति के सूक्ष्म से सूक्ष्म भागो को भी स्पर्श करना चाहता है। इस प्रकार प्रकृति दर्शन

विषयगत आधार पर साहित्यकार यात्रा साहित्य का सृजन करता है। रचनात्मक मानव अपने आस–पास के लगभग समस्त पहलुओं का गम्भीरता से विश्लेषण करता है और उनके आनंद को प्राप्त करता है। अपनी लेखनी से इन समस्त विषयों को वह अन्तर्निहित करता है, उनके साथ अपने व्यक्तिगत सम्बन्ध स्थापित करता है। यात्रा साहित्य का ऐसा सृजन लेखक द्वारा नवीन विषय चेतना का निर्माण करने में सहायक सिद्ध होता है।

साहित्यकार देश एवं विदेश भ्रमण के उद्देश्य से यात्राऐं करते है तब यात्रा साहित्य देशगत आधार पर वर्गीकृत होता है। विभिन्न यायावरों ने भारत भ्रमण कर भारत के रमणिक स्थानों की यात्रा कर उन्हें अपने साहित्य का विषय क्षेत्र बनाया। भारत में हिमालय के दुग्ध धवल सौन्दर्य का वर्णन विभिन्न यायावरों ने सुन्दर एवं कलात्मक रूप में वर्णित किया जैसे विष्णु प्रभाकर द्वारा रचित "ज्योतिपुंज हिमालय" में उन्होंने हिमालय के अपार सौन्दर्य को लक्षित किया। इसी प्रकार मोहन राकेश ने दक्षिण भारत के सौन्दर्य को अपने महान यात्रा ग्रंथ "आखिरी चद्टान तक" में समाहित कर उसके सौन्दर्य का मनमोहक रूप प्रस्तुत किया। विदेश भ्रमण कर कई यात्रा–साहित्यकारों ने अपनी लेखनी चलाई एवं यूरोप, ऐशिया एवं अमेरिका आदि के सौन्दर्य का वर्णन किया। यूरोप के विभिन्न देशों का वर्णन स्वतंत्रता के पश्चात् विभिन्न रूपों में यात्रा साहित्य में दर्शनीय है। अज्ञेय का "एक बूंद सहसा उछली" यूरोप भ्रमण का एक बहद मनमोहक व संवेदनशील यात्रा वृत्तांत है। इसी प्रकार रामवृक्ष बेनीपुरी का "पैरो में पंख बांधकर" व "उड़ते चलो उड़ते चलो" विदेशी यात्रा का सुन्दरतम चित्रण है।

यात्रा साहित्य का महत्व एवं प्रासंगिकता

हमारा देश एक धार्मिक देश है। हमारे यहां तीर्थ स्थलों के दर्शनों का विशेष महत्व रहा है। यही कारण है कि जितने भी यात्रा वृत्तांत प्रारम्भ में प्राप्त हुऐ हैं उनकी विषय वस्तु भक्ति भावना से लबरेज रही है। क्योंकि लोगों का यह विश्वास रहा है कि तीर्थ स्थानों के दर्शनों एवं तीर्थ स्थलों की यात्रा से उनके समस्त पापों की क्षमा प्राप्त होगी साथ ही उनके समस्त दुखों का निवारण होगा। इसीलिए मात्र हिन्दुओं ही नही सभी धर्मो में तीर्थ यात्राओं का विशेष महत्व है। कालान्तर में यात्राओं के मायने बदले एवं यायावर प्रकृति के सुन्दर दृश्यों को देखने की इच्छा से भी यात्राऐं करने लगा। धीरे–धीरे साहित्यकारों ने भी अपनी रचनात्मक लेखनी में यात्रा साहित्य को अपना विषय बनाया और विभिन्न देशों की संस्कृतियों, सामाजिक व्यवस्थाओं, राजनैतिक परिस्थितियों, शिक्षा, कला एवं धर्म आदि के पक्षों को उजागर किया। यात्रा साहित्यकार एक स्वतन्त्र मनोभाव वाला जीव है। वह प्रत्येक व्यक्ति, वस्तु एवं घटनाओं का यथार्थपरक वर्णन करता है। लेकिन आंखों देखी समस्त अनुभूतियों का मात्र लिपिबद्ध एकत्रीकरण ही यात्रा साहित्य की उपादेयता को नही दर्शाता। बल्कि यात्रा साहित्य में लेखक स्वयं अपने अनुभवों का अवलोकन करता है तत्पश्चात सम्पूर्ण प्रासंगिकता के साथ विपुल साहित्य का सृजन करता है।

यात्रा साहित्यकार प्रान्तीयता, जातीयता एवं भाषायी भेदों से ऊपर उठकर अन्तर्राष्ट्रीयता के मूल भाव को लेकर चलता है। विश्व समाज की समग्रता का वर्णन करने के कारण यात्रा साहित्य की उपादेयता अत्यधिक महत्वपूर्ण हो जाती है। विश्वमोहन तिवारी के शब्दों में – "यात्रा का सही अर्थों में यात्रा होना व्यक्ति का "होना" होता है।" स्पष्ट है कि जो साहित्य मनुष्य के जितना नजदीक होगा उतना ही अत्यधिक प्रासंगिक भी होगा। जीवन के सही अर्थों का उसमें समावेश होगा एवं जीवन के अनेक अनुसुलझे व दबे हुऐ प्रश्न यात्रा साहित्य के माध्यम से उजागर होगें। उसमें "वसुधैव कुटुम्बकम" की अनुभूति निहित होगी। यात्रा साहित्य आज के परिदृश्य में हिन्दी साहित्य की एक महत्वपूर्ण विधा है जो समकालीन समाज का यर्थाथ चित्रण प्रस्तुत करता है। यर्थाथपरकता यात्रा साहित्य को आज के सन्दर्भ में प्रासंगिक बनाती है, क्योंकि यात्रास्थलों के परिवेश से वर्णन का यथार्थिक सम्बन्ध होता है। यात्रा में बाह्य एवं आंतरिक परिवेश का साहित्यकार इस प्रकार सामंजस्य एवं सन्तुलन स्थापित करता है कि पाठक को वह वर्णन सजीव एवं प्रासंगिक प्रतीत होता है। मानव जीवन भी एक यात्रा है अतः जीवन के समस्त पक्ष पाठक के लिए एवं समाज के लिए सदैव प्रासंगिक होते हैं और साहित्यकार जीवन के पक्षों का रचनात्मक विवेचन कर यात्रा साहित्य को वर्तमान संदर्भ में अधिक उपादेय बना देता हैं। इसमें समस्त मनोभावों यथा – उल्लास, उत्सुकता, हर्ष, विवाद, भय, साहसिकता, आशा–निराशा, जोखिम आदि का वर्णन यात्रा साहित्य को रसमय बनाकर पाठक को पूर्णतः स्वयं से जोड़ लेता है।

यात्रा वृत्तांतों का समसामयिक होना अर्थात साहित्यकार की समसामयिक दृष्टि का होना यात्रा साहित्य को महत्वपूर्ण बनाता है। क्योंकि यात्रा साहित्य में महाकाव्यों के समान मिथक वर्णन नही होता जो यर्थाथ से दूर हो यद्यपि रचनात्मक चमत्कार दर्शनीय होता है। परन्तु उसमें भी यर्थाथ का समावेश अवश्यम्भावी है। उत्कृष्ट यात्रा साहित्य अपने समय का इतिहास बनाता चलता है क्योंकि यात्रा वृत्तांतों का समसामयिक होना भविष्य में चलकर उक्त कालीन समाज के सभी पक्षों का एवं सभी तथ्यों की जानकारी उपलब्ध कराता है और इसी मुख्य तत्व पर यात्रा साहित्य की विश्वसनीयता निर्भर करती है। इन समस्त गुणों से भरपूर यात्रा साहित्य वर्तमान परिदृश्य में अत्यधिक उपादेय, महत्वपूर्ण एवं प्रासंगिक सिद्ध होते हैं। यदि दृष्टिपात किया जाऐ तो हम पाऐंगें कि राहुल सांकृत्यायन के यात्रा साहित्य में ज्ञान की त्रिवेणी देखने को मिलती है यथा – यर्थाथ, ज्ञान, व रचनात्मक मोहकता तीनों का समावेश दिखलायी पड़ता है। मोहन राकेश के यात्रा साहित्य में तत्कालीन समाज की विडम्बनाओं एवं विषमताओं का सुन्दर चित्रण है साथ ही प्रकृति के सौन्दर्य का भरपूर वर्णन है। अज्ञेय ने भी अपने समय के भारत एवं यूरोप का सजीव वर्णन किया है। इसी प्रकार रामवृक्ष बेनीपुरी के दोनो यात्रा ग्रंथों में समाज की उन्नति एवं भारत में स्वतंत्रता पश्चात के बाद किस प्रकार समाज आगे प्रगति करे इस सन्दर्भ में मौलिक विवेचना देखने को मिलती है। कुल मिलाकर यह सत्य है कि यात्रा साहित्य समाज का दर्पण है वह अन्तराष्ट्रीय स्तर पर संस्कृतियों को उजागर करता है और मानव जीवन को विभिन्न आयाम प्रदान करता है।

यात्रा वृत्तांत यात्रा साहित्यकार के यात्रा अनुभवों की संवेदनात्मक एवं कलात्मक प्रस्तुति है। जिसमें समस्त विश्व की सांस्कृतिक झॉकी, मानव–जीवन की समग्रता–सम्पूर्णता एवं प्रकृति की विराट सुन्दरता के दर्शन होते हैं। वास्को–ड–गामा और कोलंबस ने भारत और अमेरिका जैसे देशों को खोज कर यात्रा की महत्ता को स्पष्ट किया। वहीं अनेक यात्रा–साहित्यकारों ने अपने यात्रा अनुभवों से यात्रा साहित्य को समृद्ध किया। यात्रा साहित्य माध्यम से अनेक यायावरों ने देश विदेश की संस्कृति, कला, शिक्षा एवं धर्म से सम्पूर्ण विश्व का परिचय करवाया साथ ही साहित्य की इस महान विधा को ऊॅचाई के शिखर पर पहुंचाया, और सृजनात्मक विधा के रूप में इसका स्थान निर्धारित किया। प्रारम्भ में जहां यात्रा–वर्णन प्राकृतिक सौन्दर्य का वर्णन मात्र थे वहीं आगे चलकर यात्रा साहित्य मानव जीवन की विषमताओं पर केन्द्रित हुऐ। यायावरों ने मानव जीवन के समस्त पक्षों को अपने यात्रा साहित्य की विषय–वस्तु बनाया। श्रीधर पाठक एवं भारतेन्दु ने जहां प्रारम्भिक यात्रा वृत्तांतों की रचना की वहीं राहुल सांकृत्यायन, अज्ञेय, निर्मल वर्मा, रामवृक्ष बेनीपुरी एवं मोहन राकेश ने इस साहित्यिक विधा को एक नई दिशा प्रदान कर इसे समृद्ध बनाया। यायावरों ने विभिन्न देशों की अलग–अलग परिस्थितियों का मौलिक विवेचन किया। उन्होंने सामाजिक, सांस्कृतिक परिस्थितियों का संवेदनात्मक व तटस्थ प्रस्तुतिकरण किया। हिन्दी के यात्रा साहित्य की इस शताब्दी में क्या यात्रा रही और आगे इसकी क्या मंजिले होगी यह तो भावी यात्रा साहित्यकार एवं वैश्विक परिस्थितियां ही तय करेंगी परन्तु यह निश्चित है कि यात्रा साहित्य समाज के यर्थाथ को उदघारित करता है। "यात्रा" शब्द की अवधारणा भी धीरे–धीरे परिवर्तित हो चुकी है। यात्रा करना व यात्रा अनुभवों की साहासिक व्याख्या एक अन्वेषण कार्य बन चुका है। इसमें स्थूल से लेकर सूक्ष्म तथ्यों सभी का रोचकता से चित्रण किया जाता है जो यात्रा साहित्य को एक नई दिशा प्रदान करता है। आज का साहित्यकार यात्रा साहित्य का सृजन करने के लिए प्रेरित हो रहा है, अब मात्र साहित्यकार केवल घूमने के लिए या मात्र मन बहलाने के लिए यात्राऐं नही करता अपितु यात्रा साहित्यकार के मन में यात्राओं को लेकर उद्देश्य बदल चुके हैं। वे यात्राओं का गम्भीरता से अवलोकन करते हैं साथ ही देश–विदेशों की संस्कृति के साथ विश्व मानव की विचार शैली को भी हमारे सम्मुख प्रेषित करते हैं। यात्रा साहित्य आज भाषा–साहित्य, आर्थिक–विर्मश, नारी–सहभागिता, अध्यात्म चर्चा, खेल व संगीत एवं समाजिक समस्याओं को अपने साहित्य के माध्यम से प्रस्तुत करता है। यात्रा साहित्यकार मात्र कलात्मकता भाषा शैली एवं लेखन शैली से ही नही बल्कि अपनी विचार शीलता, संवेदनात्मकता, यर्थाथता एवं तटस्थता से साहित्य का सृजन करता है जिससे यात्रा साहित्य आने वाले भविष्य के लिए आज का इतिहास रच रहा है। यात्रा आज एक विशाल उद्योग बन गया है आवश्यक है कि भारतीय यायावर साहित्यकार अनेक भाषाओं में

यात्रा वृत्तांत लिखे साथ ही अब तक लिखित यात्रा ग्रंथों का अन्य भाषाओं में भी अनुवाद प्रस्तुत करें।

संदर्भ ग्रंथ सूची

1 हिन्दी का यात्रा–साहित्य एक विहंगम दृष्टि / विश्वमोहन तिवारी / आलेख प्रकाशन दिल्ली / संस्करण – 2013।

2 यात्रा साहित्य का उद्‌भव और विकास / डॉ0 सुरेन्द्र माथुर / साहित्य प्रकाशन दिल्ली / संस्करण – 1962।

3 पैरों में पंख बांधकर / रामवृक्ष बेनीपुरी / संपादक–महेन्द्र बेनीपुरी / अनामिका पब्लिशर्स दिल्ली / संस्करण – 2015।

4 उड़ते चलो उडते चलो / रामवृक्ष बेनीपुरी / प्रभात प्रकाशन दिल्ली / संस्करण – 2012।

5 आखिरी चट्‌टान तक / मोहन राकेश / भारतीय ज्ञानपीठ दिल्ली / दूसरा संस्करण – 2015।

6 घुमक्कड़ शास्त्र / राहुल सांकृत्यायन / किताब महल इलाहाबाद–2004 / प्रथम संस्करण – 1948।

7 हिन्दी साहित्य कोश भाग–1 / ज्ञानमण्डल लिमिटेड वाराणसी / तृतीय संस्करण – 1985।